आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :– कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांकः–प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2728 • उदयपुर, मंगलवार 14 जून, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

सिमलीगुड़ा (उड़ीसा) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षों से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 12 अप्रेल 2022 को कल्याण मण्डपम सिमलीगुड़ा, जिला कोरापुट (उड़ीसा) में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता लॉयन्स क्लब सिमलीगुड़ा, उड़ीसा रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 80, कृत्रिम अंग वितरण 59, कैलिपर वितरण 21 की सेवा हुई। उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् राजेन्द्र कुमार जी पात्रों (अध्यक्ष नगर पालिका, सिमलीगुड़ा), अध्यक्षता श्रीमान् आनंद जी पाटवानिया (अध्यक्ष लॉयन्स क्लब, सिमलीगुड़ा), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् मनोज कुमार जी पात्रों (कोषाध्यक्ष लॉयन्स क्लब, सिमलीगुड़ा), श्रीमान् आनन्द जी सेनापति (उपाध्यक्ष लॉयन्स क्लब, सिमलीगुड़ा), श्रीमती सुमन्या जी (प्रोजेक्ट मेनेजर चिल्ड ऑफिसर, सिमलीगुड़ा) रहे।

डॉ. रामनाथ जी ठाकुर (पी.एन.डो.), श्री नाथू सिंह जी (टेक्नीशियन) सहित शिविर टीम में श्री लालसिंह जी भाटी (शिविर प्रभारी), श्री मुकेश जी त्रिपाठी (सह–प्रभारी), श्री बहादुरसिंह जी (सहायक) ने भी सेवायें दी।

नांदेड़ (महाराष्ट्र) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान का ध्येय है कि दिव्यांग भी दौड़ेगा–अपनी लाठी छोड़ेगा। इस क्रम में संस्थान की शाखाओं व दानदाताओं के सहयोग से दिव्यांग जाँच, उनका ऑपरेशन के लिये चयन तथा कृत्रिम अंगों का माप लेना व अंग लगाने का कार्य गति पर है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 3 व 4 अप्रेल 2022 को लोकमान्य मंगल कार्यालय अण्णा भाउ साठे चौक, नांदेड़ में हुआ। शिविर सहयोगकर्ता कृपा सिंधु दिव्यांग सेवा संघटना रहा। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 222, कृत्रिम अंग माप 92, कैलिपर माप 51 की सेवा हुई तथा 40 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री बालयोगी वेंकेट स्वामी जी महाराज, अध्यक्षता श्री सुदेश जी मुकाबार (शिविर संयोजक), विशिष्ट अतिथि श्री विनोद जी राठौड़ (माहुर, संयोजक), श्री लक्ष्मीकांत जी, श्री लक्ष्मी नारायण जी, श्री प्रदीप जी बुकरेवार, श्री इगडरे जी पाठील, श्री राजेश्वर जी मेडेवाल, श्री सचिन जी पालरेवार (समाज सेवी) रहे। डॉ. वरुण जी श्रीमाल (ऑर्थोपेडिक सर्जन), श्री रिहांस जी महता (पी.एन.डो.), श्री किशन जी (टेक्नीशियन) सहित शिविर टीम में हरिप्रसाद जी शर्मा (शिविर प्रभारी), श्री गोपाल जी गोस्वामी, श्री सत्यनारायण जी मीणा (सहायक) ने भी अमूल्य सेवायें दी।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ–पांव) माप शिविर

दिनांक : 19 जून, 2022

- मंगलम पोलो ग्राउण्ड के सामने, कोर्ट रोड, शिवपुरी मध्यप्रदेश
- गीता आश्रम, हनुमान चौराहा, जैसलमेर, राजस्थान

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

पू. कैलाश जी 'मानव'

'सेवक' प्रशान्त भैया

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

1,00,000 We Need You !
से अधिक सहयोग देकर, दिव्यांगों के सपनों को करें साकार
अपने शुभ नाम या प्रियजन की स्मृति में करायें निर्माण

मानवता के मन्दिर में बनेंगे कई वार्ड-सेवा कक्ष
* 450 बेड का निःशुल्क सेवा हॉस्पीटल * 7 मंजिला अतिआधुनिक सर्वसुविधायुक्त* निःशुल्क शल्य चिकित्सा, जांचें, ओपीडी * भारत की पहली निःशुल्क सेन्ट्रल फेब्रीकेशन यूनिट * प्रज्ञाचक्षु , विमंदित, मूकबधिर, अनाथ एवं निर्धन बच्चों को निःशुल्क आवसीय व्यावसायिक प्रशिक्षण

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org
Cont. : 0294-6622222, +917023509999 (WhatsApp)

अनाथ 6 भाई–बहन की मदद को पहुंची नारायण सेवा

नारायण सेवा संस्थान, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सहयोग से माता–पिता की दुर्घटना में मौत से अनाथ हुए 6 बच्चों तक बड़गांव तहसील के कालबेलिया कच्ची बस्ती में राशन और मदद लेकर पहुंची। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि पीड़ित मानवता कि सेवा में सदैव तत्पर निदेशक वंदना जी अग्रवाल की टीम ने 6 अनाथ भाई–बहनों की विभिन्न साइज के कपड़े और मासिक खाद्य सामग्री जिसमें आटा, चावल, दाल, शक्कर, तेल, मसाले आदि थे, भेंट किए गए। साथ ही बच्चों एवं पड़ोसियों को विश्वास दिलाया कि भविष्य में भोजन, राशन, वस्त्रादि की हरसंभव मदद की जाएगी।

नारायण सेवा में मिले सेवा और प्यार

ख्यालीराम–बौद्धदेवा निवासी कनीगवा जिला बदायूँ (उ.प्र.) के खेतीहर साधारण परिवार का बेटा नरेशपाल (19) दोनों पॉव से लाचार था। करीब ढाई साल की उम्र में बुखार के दौरान लगे इंजेक्शन के बाद दोनों पाँव लगातार पतले होते चले गए। बिना सहारे के लिए उठना, बैठना और खड़ा रहना भी मुश्किल था। मथुरा में इलाज भी करवाया परन्तु हालत वही रही। नरेश ने बताया कि हरियाणा में उसके परिवार से सम्बद्ध व्यक्ति ने नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर में पोलियो चिकित्सा की जानकारी दी जिसका इलाज भी यहीं हुआ था। नरेश के साथ आए उसके भाई अभय सिंह ने बताया कि ऑपरेशन हो चुका है। हम पूरी तरह संतुष्ट हैं। दुनियाभर में संस्थान का प्रचार होना चाहिए ताकि हम जैसे गरीब लोग भी इसका लाभ ले सकें। इसके संस्थापक पूज्य 'मानव सा.' के जुग–जुग जीने की प्रभु से कामना करते हैं।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मित्ति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

माताओं मेरी बहनों। अब नहीं विकास किया तो कब करेंगे? अब दान नहीं दिया तो कब देंगे? अब दया नहीं आयी तो कब आयेगी ? अब यदि स्नेह नहीं हुआ तो कब होगा? किस दिन का इतंजार कर रहे हैं ?

हां हां कितना बयां करू मैं,
इस दुनिया की अजब गति।
चंदन आना और जाना है,
फर्क नहीं है राई रती।
देख कमाई की हो जिसने,
बस उसकी ही खड़ी रही।

परदेशी तो हुआ रव्वाना प्यारी काया पड़ी रही।

गुरुदेव एक प्रश्न आया है कि– मनुष्य का सकंल्प बल कमजोर क्यों पड़ जाता है ? इंसान प्रतिज्ञा रहता है, संकल्प की तरफ बढ़ता है लेकिन वापस उस राह से भटक क्यों जाता है ?

विकार जब बहुत प्रबल होते हैं। जैसे काम, क्रोध, मद, लोभ, दंभ ये अपने दु मन हैं। इनकी भाक्ति बढ़ जाती है तो, सकंल्प शक्ति कमजोर पड़ जाती है। और अपने मित्र भी है। सत्य, प्रेम, स्नेह, करुणा और वात्सल्य। जैसे कुछ भात्रु है वैसे कुछ मित्र भी हैं। यदि मित्र की संख्या बढ़ती है। रामहि केवल प्रेम पियारा, जानि लेहु जो जानहिं हारा। और कृष्ण भगवान गाड़ी में बिठा दो।

हमें सुख शांति के नगर में जाना है। हमें प्रेम की नगरी में जाना है। हमें सत्य के महानगर में जाना है। हमारा लक्ष्य, ऐसा सुख जो संसार के किसी भी विषयों में नहीं मिलता। भोग, भोग लिये। ययाति ने तो इतने भोग भोगे थे कि बुढ़ढ़ा हो गया फिर भी भोग भोगने की इच्छा पूरी नहीं हुई। तो अपने तीन– चार जवान बेटों को कहा कि–तुम अपनी जवानी मुझे दे दो और मेरा बुढ़ापा तुम ले लो। तो जिन बेटों ने मना किया उनको तो श्राप दे दिया और एक बेटे ने अपनी जवानी उधार दे दी। फिर जवानी भोगी, फिर बेटे की भी जवानी भोगी फिर बूढ़ढ़ा हो गया। और फिर भी भोग भोगने से आसक्ति नहीं हटी तो उन्होंने हम सब लोगों के लिये लिखा–वैराग्य ही सच्ची साधना है।

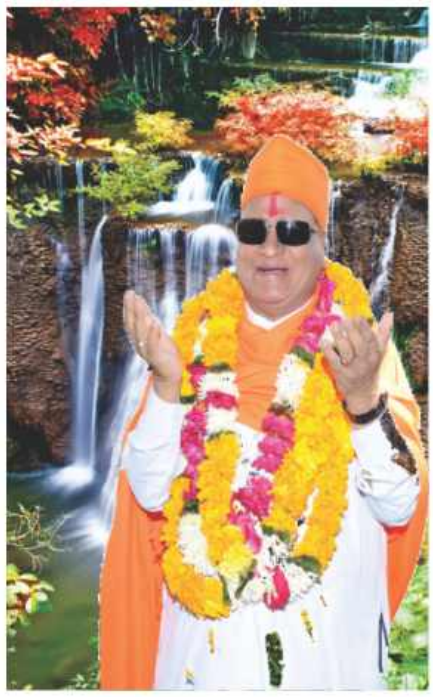

जीवन में खुशियाँ व्याप्त, दिल का दर्द समाप्त

नई दिल्ली के रहने वाले अशोक कुमार के 4 वर्षीय सुपुत्र अभयदास के बचपन से ही दिल में छेद था। बच्चे को शुरुआत से ही बहुत दिक्कत होती थी। दिन ब दिन बच्चा कमजोर पड़ता जा रहा था। बच्चे को साँस लेने में भी दिक्कत आती थी। अशोक कुमार अपने बच्चे को लेकर कई जगह गये, परन्तु बच्चे की तबीयत सही नहीं हो रही थी। तब उन्होंने दिल्ली के एक प्राईवेट हॉस्पीटल में अपने बेटे का चैकअप करवाया जहाँ डॉक्टर ने दिल में छेद बताया तथा ऑपरेशन के लिए करीब 1 लाख रुपये का खर्चा बताया। अशोक कुमार के पास इतने पैसे नहीं थे कि वे अपने बच्चे का ऑपरेशन करवा सकें। महीने के मात्र 5–6 हजार रुपये कमाकर अपने परिवार के 5 सदस्यों का खर्चा चलाने वाले अशोक कुमार निराश थे, क्योंकि वे अपने बच्चे का ऑपरेशन नहीं करवा पा रहे थे। एक दिन उन्हें टी.वी. के माध्यम से नारायण सेवा संस्थान ' द्वारा आयोजित कैम्प के बारे में जानकारी मिलीं इस पर वे तुरंत अपने बच्चे को लेकर उदयपुर आये जहाँ उनके बच्चे का चैकअप किया गया और ऑपरेशन की दिनांक दी गई। कुछ दिन बाद बच्चे का जयपुर के नारायण हृदयालय हॉस्पीटल में ऑपरेशन किया गया। बच्चे के ऑपरेशन में करीब 90 हजार रुपये का खर्चा आया जो नारायण सेवा संस्थान के माध्यम से दादा कान हसोमल लखानी जी द्वारा वहन किया गया। आज वह स्वस्थ है तथा सामान्य बच्चों की तरह खेलकूद सकता है।

सम्पादकीय

नर सेवा–नारायण सेवा

नर से नारायण बनने की यात्रा अब तक का परम लक्ष्य रहा है। परमात्मा ने हरेक मनुष्य में ऐसी पात्रता भर दी है कि वह अपनी निहित शक्तियों को जागृत करके नारायण बनने का सौभाग्य पा सकता है। यह सही है कि हरेक नर नारायण नहीं बन सकता। पर वह नर तो है ही। नारायण बनने की प्रारंभिक सीढ़ी तो वह है ही। हम नारायण को न पहचान सकें, उन तक हमारी चेतना न पहुंच सकें। तब भी हम नर को तो देखते ही हैं। किसी भी नर की सेवा नारायण की सेवा का ही स्वरूप है। किसी नर के द्वारा किसी नर की सेवा अध्यात्म पथ का प्रथम चरण है। जो चरण चल पड़ते हैं वे मंजिल तक पहुँचते ही हैं। इसलिए नर सेवा को नारायण सेवा ही माना गया है। नारायण सेवा का तो कोई निर्धारित विधान है। एक सधी हुई परम्परा है। पर नर सेवा के लिए तो न किसी परम्परा की आवश्यकता है। और न ही किसी विधि–विधान की। जो भी जरूरतमंद लगे उसकी किसी भी प्रकार की सेवा संभव है। यह सेवा बड़े पैमाने पर हो या लघु, दीर्घकालीन हो या तात्कालिक, प्रकट हो या अप्रकट, नियमित हो या अनियमित इससे कोई अंतर नहीं पड़ता है। नारायण सेवा से कल्याण होगा पर न जाने कब? किन्तु नर सेवा से तो तुरन्त संतुष्टि व आत्मिक प्रसन्नता होती है। इसलिए नारायण सेवा न भी हो तो नर सेवा तो कर लें। नर सेवा भी नारायण तक ही पहुँचती है।

कुछ काव्यमय

सेवा की परम्परा तो,
मानव के साथ जन्मी है।
सेवा से कठोर में भी
उत्पन्न होती नमी है।
सेवा करना मानवता है,
यही लक्ष्य जीवन का है।
वरना कुछ भी पा लें,
फिर भी लगती रहे कमी है।

अपनों से अपनी बात

प्रभु कृपा से करुणा बढ़े

चक्रवर्ती राजा जनक की मखमली गदलों पर करवटें बदलते हुए झपकी लगी ही थी कि एक सपना आया। पड़ोसी देश के राजा ने संदेश भेजा –"युद्ध के लिए तैयार हो जाओ अथवा अधीनता स्वीकार करो।" युद्ध होना था–हुआ।

राजा जनक बुरी तरह हारे। सब कुछ छोड़कर भागे जा रहे हैं –भूखे प्यासे, शत्रुओं द्वारा पकड़े जाने का बड़ा भय, तीन दिन से अन्न का दाना नहीं गया पेट में। कपड़े तो तार–तार हो ही गये थे, लगा कि भूख के मारे प्राण भी साथ छोड़ देंगे।

सामने नजर गई तो देखते हैं कि लम्बी सी लाईन लगी हुई है। सबके हाथों में कटोरे हैं। तख्ते पर बैठा हुआ व्यक्ति कड़ाह में से खिचड़ी निकालता है तथा एक–एक व्यक्ति के कटोरे में रख देता है। भूख के मारे राजा जनक लाईन में लग गये। दो

घण्टे के बाद जब नम्बर आया तो देखा कि मात्र थोड़ी सी ही खिचड़ी बची है। जैसे ही उनका नम्बर आया मात्र जली हुई कुछ खिचड़ी चिपकी हुई बाकी रह गई थी।

बड़े करुण हृदय से बोले सेठजी किसी तरह से यह जली हुई ही मुझे देदो, भूख बहुत लगी है।" "जैसी तुम्हारी इच्छा" कहते हुए मुनीमजी ने जली हुए परत के दो चम्मच फैले हुए दोनों हाथों पर रख दिये। काँपते हुए हाथ मुँह की तरफ बड़े ही थे कि कुत्ते ने झपट्टा मारा, जनक जी कराह उठे, और उनकी चीत्कार सुनते ही सुनयना घबरा कर पूछा–"क्या हुआ महाराज?" आप चिल्लाये कैसे?" विदेहराज तो चारों तरफ देख रहे थे, दो ही प्रश्न बार–बार पूछ रहे थे यह सच या वह सच ? तथा भूख की इतनी व्याकुलता कैसे हो,

पहले प्रश्न का उत्तर तो अष्टावक्र जी महाराज भरी सभा में जनक जी को दिया था, परन्तु प्रश्न अभी भी समाज के सामने उत्तर की प्रतीक्षा रहा है। कुछ कहावतें हमने झूठी होती देखी। उनमें से एक यह भी कि "भगवान भूखा उठाता है पर भूखा सोने नहीं।" उन आदिवासियों के झौंपड़े भी हमने जहाँ तीन–तीन दिन से चूल्हे नहीं जले। आइए, आप और हम भी ऐसे निराश्रित लोगों की आंखों में झांकने का प्रयास करें। हृदय इन प्रश्नों का उत्तर देगा – हमारी करुणा –प्रभु कृपा से बढ़े।

–कैलाश 'मानव'

सच्चा राजा

बंगाल में गुष्करा एक छोटा–सा स्टेशन है। एक दिन रेलगाड़ी आकर स्टेशन पर खड़ी हुई। उतरने वाले झटपट उतरने लगे और चढ़ने वाले दौड़–दौड़कर गाड़ी में चढ़ने लगे। एक बुढ़िया भी गाड़ी से उतरी। उसने अपनी गठरी खिसका कर डिब्बे के दरवाजे पर तो कर ली थी; किन्तु बहुत चेष्टा करके भी उतार नहीं पायी थी। कई लोग गठरी को लाँघते हुए डिब्बे में चढ़े और डिब्बे से उतरे। बुढ़िया ने कई लोगों से बड़ी दीनता से प्रार्थना की कि उसकी गठरी उसके सिर पर उठाकर रख दें; किन्तु किसी ने उसकी बात पर

ध्यान नहीं दिया। लोग ऐसे चले जाते थे, मानो बहरे हों। गाड़ी छूटने का समय हो गया। बेचारी बुढ़िया इधर–उधर बड़ी व्याकुलता से देखने लगी। उसकी आँखों से टप–टप आँसू गिरने लगे। एकाएक प्रथम श्रेणी के डिब्बे में बैठे एक सज्जन की दृष्टि बुढ़िया पर पड़ी। गाड़ी छूटने की घंटी बज चुकी थी; किन्तु उन्होंने इसकी परवाह नहीं की। अपने डिब्बे से वे शीघ्रता से उतरे और बुढ़िया की गठरी उठाकर उन्होंने उसके सिर पर रख दी। वहाँ से बड़ी शीघ्रता से अपने डिब्बे में जाकर जैसे ही वे बैठे, गाड़ी चल पड़ी। बुढ़िया सिर पर गठरी लिये उन्हें आशीर्वाद दे रही थी – 'बेटा ! भगवान् तेरा भला करे।' तुम जानते हो कि बुढ़िया की गठरी उठा देने वाले सज्जन कौन थे ? वे थे कासिम बाजार के राजा मणीन्द्रचन्द्र नन्दी, जो उस गाड़ी से कोलकाता जा रहे थे। सचमुच वे राजा थे, क्योंकि सच्चा राजा वह नहीं है जो धनी है या बड़ी सेना रखता है। सच्चा राजा वह है, जिसका हृदय उदार है, जो दीन–दुःखियों और दुर्बलों की सहायता कर सकता है ? ऐसे सच्चे राजा बनने का तुम में से सबको अधिकार है। तुम्हें इसके लिये प्रयत्न करना चाहिये।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

उन दिनों राजस्थान के मुख्य सचिव पद पर उदयपुर के होनहार और अत्यन्त कुशल मीठालाल मेहता आसीन थे। मेहता ने अपनी कार्यकुशलता और कर्मठता से न केवल राजस्थान वरन देश में भी अपनी कीर्ति पताका फहरा दी थी। कैलाश इनसे मिलने एक बार जयपुर गया। मेहता अपने कार्यालय में बड़े बड़े अधिकारियों के साथ एक मीटिंग में व्यस्त थे। कैलाश ने अपना कार्ड अन्दर भिजवाना चाहा तो उनके पी.ए. ने असमर्थता व्यक्त करते हुए कहा कि साहब अत्यंत महत्वपूर्ण मीटिंग में व्यस्त है। कैलाश ने आग्रह किया कि आप कार्ड तो भिजवा दो, बुलवा लेंगे तो मिल लूंगा वरना प्रतीक्षा कर लूंगा, जब वे समय दे देंगे तब आ जाऊंगा।

पी.ए. आनाकानी करता रहा, मगर कैलाश हाथ जोड़कर जिस विनम्रता से उससे गुहार कर रहा था, शायद उसे दया आ गई और उसने चपरासी को बुला कैलाश का कार्ड अन्दर साहब को देने को कहा। चपरासी भी हैरत से कभी कैलाश को तो कभी पी.ए. को देखने लगा। उसे भी पता था कि अन्दर अत्यंत महत्वपूर्ण बैठक चल रही है। वह सहमते हुए अन्दर गया और मुख्य सचिव के समक्ष कार्ड रखकर तुरंत लौटने लगा। मीठालाल मेहता ने एक नजर से ही कार्ड को देख लिया था और चपरासी को आदेश दिया कि इन्हें अन्दर भेजो।

चपरासी ने बाहर आकर ज्यूं ही कैलाश को कहा कि –साहब अन्दर बुला रहे हैं, पी.ए. भौंचक्का रह गया, उसने चपरासी की तरफ देखा तो उसने मुस्कराकर अपना सिर सहमति में हिलाया। कैलाश की प्रसन्नता का पारावार नहीं था, उसने इन दोनों को धन्यवाद दिया और अपने कागज–पत्तर हाथ में लेकर अन्दर प्रविष्ट हुआ। कैलाश को देखते ही मेहता अपनी सीट से खड़े हो गये और उसका स्वागत करते हुए अपने इर्द–गिर्द बैठ तमाम बड़े–बड़े अधिकारियों से कहा कि जितने महत्व की बात हम लोग कर रहे थे उससे कई गुना ज्यादा महत्व की बात मुझे कैलाश से करनी है। कैलाश अपने इस अभूतपूर्व परिचय से दंग रह गया। वह मीठालाल मेहता से आज दिन तक नहीं मिला था। जिस तरह से मेहता ने तमाम अधिकारियों से कैलाश का परिचय करवाया उससे स्पष्ट था कि कैलाश के कार्यों की भनक सचिवालय तक पहुंच चुकी थी।

कैलाश ने अपने सेवा कार्यों की विस्तृत जानकारी दी। सेवा धाम में बन रहे कमरों के बारे में भी बताया और कहा कि अब 25 अनाथ बच्चे और ला सकते है। मेहता ने कैलाश की सारी बातें ध्यान से सुनी फिर एक अधिकारी को कहा कि आप उदयपुर जाओ और इनका काम देखो। यदि आपको लगे कि इनके काम में मदद की जा सकती है तो जितनी मदद कर सकते हो करना।

अंश - 125

बुद्ध का मौन

बुद्ध को जब बोध प्राप्त हुआ तो कहा जाता है कि वे एक सप्ताह तक मौन रहे। उन्होंने एक भी शब्द नहीं बोला। पौराणिक कथाएँ कहती हैं कि सभी देवता चिंता में पड़ गये। उनसे बोलने की याचना की। मौन समाप्त होने पर वे बोले , जो जानते हैं वे मेरे कहने के बिना भी जानते हैं और जो नहीं जानते, वे मेरे कहने पर भी नहीं जानेंगे। इसलिए मैंने मौन धारण किया था। जो बहुत ही आत्मीय और व्यक्तिगत हो उसे कैसे व्यक्त किया जा सकता है? देवताओं ने उनसे कहा, जो आप कह रहे हैं, वह सत्य है परन्तु उनके बारे में सोचें जिनको पूरी तरह से बोध भी नहीं हुआ है और पूरी तरह से अज्ञानी भी नहीं है। उनके लिए आपके थोड़े से शब्द भी प्रेरणादायक होंगे। तब आपके द्वारा बोला गया हर शब्द मौन का सृजन करेगा। बुद्ध के शब्द निश्चित ही मौन का सृजन करते हैं क्योंकि बुद्ध मौन की प्रतिमूर्ति हैं। मौन जीवन का स्रोत है। जब लोग क्रोधित होते हैं तो वे चिल्लाते हैं और फिर मौन हो जाते हैं। कोई दुःखी होता है, तब वह भी मौन की शरण में जाता है। जब कोई ज्ञानी होता है, तब भी वहाँ पर मौन होता है।

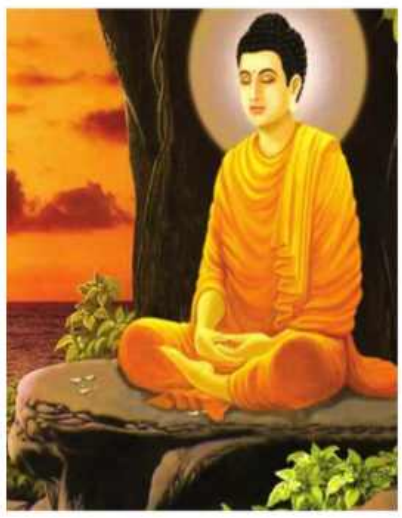

गर्मी में सोने से पहले आंखों में डाले गुलाब जल

तापमान में बढ़ोतरी से आंखें लाल होना, खुजली होना और ड्रायनेस आना आम समस्या है। ये उपाय काम लें–

- तेज धूप में बाहर निकलने से बचना चाहिए।
- जरूरी हो तो पानी पीकर व चश्मा लगाकर ही बाहर निकलें।
- साथ ही छाता लगाकर या सिर पर कपड़ा डालकर निकलें।
- दिन में तीन से चार बार सामान्य जल से आंखें धोएं।
- रात को सोते समय आंखों में गुलाब जल डालें।
- साथ ही आंखों के चारों और गाय के घी से और पैरों के तलवों पर नारियल के तेल से मालिश करें।

धूप से एलर्जी में मुलेठी व आंवला के द्रव से आंखें धोएं।

बड़ा दान

दान मानव जीवन का महत्व अंग है। "देना" ही जीवन है। परंतु दान भी सामर्थ्यानुसार होना चाहिए। दान में न अहंकार होना चाहिए, न ही उसमें कृपणता होना चाहिए। एक बार स्वामी स्वामी विवेकानन्द के प्रवचन के दौरान लोग दान दे रहे थे। सभी से दान, मंच के नीचे बैठे संग्रहकर्ता द्वारा स्वीकार किया जा रहा था। अचानक एक बूढ़ी औरत जो फटे कपड़ों में थी, मंच के ऊपर चढ़ने लगी तो अनुयायियों ने उसे रोकने का प्रयास किया।

इस पर स्वामी जी ने कहा, "इन्हें मत रोको, ऊपर आने दो।" बूढ़ी औरत ऊपर चढ़ी और स्वामी जी के समीप पहुँचकर अपनी फटी साड़ी से तीन रुपये निकालकर स्वामी को भेंट किए और कहा, "मेरे पास यही है।"

स्वामी जी ने सहर्ष भेंट स्वीकार की और उस बूढ़ी औरत के पैर छुए। यह देख कर सभी अचरज में पड़ गए। स्वामी जी ने सभी की शंका का निवारण करते हुए कहा, "सभी दानदाता जिन्होंने बड़ी–बड़ी रकम का दान दिया, वे धन्यवाद के पात्र हैं, परंतु उन्होंने समस्त में से अंश का दान दिया, लेकिन इस महिला का दान इन बड़ी रकम वाले दानों से भी बड़ा है, क्योंकि इन्होंने अपने भविष्य की परवाह न करते हुए लोक–कल्याण के लिए अपना सर्वस्व दान कर दिया, अतः ये पूजनीय है।"

यदि बाल्टी भर पानी से एक लोटा पानी ले लिया जाए तो बाल्टी में भरे पानी की मात्रा में कोई विशेष कमी नही आती, परन्तु लोटे भर पानी में से एक गिलास पानी ले लेना महत्व रखता है। दान का महत्व उसकी धन क्षमता से नहीं होता है, अपितु उसको करने वाले की भावना से होता है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन

2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार

2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

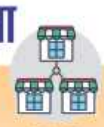

1200 नई शाखाएं

2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं

2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी

2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र

आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन

वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ

6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ

विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अनुभव अमृतम्

मैं आश्चर्य से देख रहा था। यहाँ नारायण सेवा का केम्प रहेगा, उद्घाटन करेंगे, और 3:00 बजे महामहिम डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम साहब नारायण सेवा के बेकरिया स्थित केम्प में कृपा करके पधारे। जैसे ही फ्लोर रिएक्शन आर्थोसिस केलिपर्स उनके हाथ में लिया गया था। आर्थोसिस रिसर्च उनके आँखों के सामने घूमने लगी। उन्होंने कहा–ये तो बहुत अच्छा किया, कैलाश जी। नारायण सेवा को बहुत धन्यवाद है। अपने हाथ से बच्चों को पहनाया, 3 बच्चों को पहनाया, नीचे बैठ गये। और उन्होंने कहा– चलो, देखो, चलकर बताओ। बच्चों की आँखों में हर्ष के आँसू थे। मैंने कहा–राष्ट्रपति महोदय जी आपने दुनिया को अद्भुत भेंट की। इन दिव्यांग बच्चों के लिए आपने रिसर्च करके ये लोर ऑर्थोसिस केलिपर्स की रिसर्च की, और नारायण सेवा में मैंने उसका निर्माण प्रारंभ किया।

प्रभु की कृपा भयो सब काजु।
जनम हमार सफल भयो आजु।।

जो सुन्दर नजर आ रहा था। वो सम्भव हुआ, अब ये पंक्तिया ब्रह्माण्ड में गूंज उठी।

कुछ भी नहीं असम्भव जग में,
सब सम्भव हो सकता है।।
कार्य हेतु यदि कमर बांधलो,
तो सबकुछ हो सकता है।।

प्रभु ने किया। कैलाश क्या मायना रखता हैं? कमला जी भी वहीं थी। मानस रंजन साहू थे, प्रशांत भैया, कल्पना और परमात्मा की कृपा से ये अद्भुत कार्य सम्पन्न हुआ। 10 मिनट तक महामहिम जी रहे। उस समय फोटोग्राफ ली।

सच्ची सेवा प्रभु पूजा है,
उत्तम यज्ञ विधान है।
द्ररिद नारायण बनकर आता,
कृपा सिन्धु भगवान है।।
ये सेवा धर्म महान् हैं।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 478 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूटेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023